अध्याय पंद्रहवाँ

॥श्री गणेशाय नम:॥ श्री सरस्वत्यै नम:॥ श्री सिद्धारूढाय नम:॥

"मैं स्वेच्छानुसार आप की शरण में आया हूँ, हे सिद्धनाथजी, आप के सिवाय मेरी रक्षा करने वाला कोई भी नहीं है। शरणागतों पर कृपा करने वाले दयालु सिद्धानाथजी मैं आपके चरणों में माथा रखकर प्रणाम करता हूँ, ज्ञानदाता होने वाले आप मेरे हृदय में निवास कीजिए।"

जिसका कोई आदि और अंत नहीं है, ऐसे आप की जयजयकार हो। आप सभी को नियंत्रित करने वाले होते हुए मुमुक्षुओं के लिए सतगुरुनाथजी का सगुण रूप धारण करके अवतारित हुए हैं। विविध प्रकार के घटनाएँ घटते रहने वाली यह गृहस्थी, जैसे क्रोध तथा व्देष रूपी दातों वाला एक मगरमच्छ है, परंतु आप के चरणों की कृपा से इस मगरमच्छ का विनाश हो जाता है। मन हमेशा विषयोपभोगों की ओर भागता है और अनजाने में क्रोधव्देष की नदी में गिर पड़ता है, परंतु दयालु सतगुरुजी मनुष्य की ये कमजोरी समझकर उसे इन दोषों से पूर्णत: मुक्त करते हैं। जैसे नदी के भँवर में फँसा हुआ कोई कीड़ा गरगर घूमते समय, कोई दयालु मनुष्य आकर, उस कीड़े का विनाश न हो इसलिए उसे उठाकर किसी पेड़ की छाया में रख देता है, उसी प्रकार किसी निमित्तकारण की प्रतीक्षा किये बिना दयाघन सतगुरुजी शरणागत सांसारिक लोगों की रक्षा करते हैं। इसी कारण से सतगुरु माता केवल भक्तों के खातिर हुबली में रही और उसने शरणागतों की प्रेम से रक्षा करके उन्हें आश्रय दिया। श्रोतागण, अब एक सुरस कथा सुनिए, जिसे सुनने से पाप का विनाश होकर हृदय में आनंद प्रकट होगा और निश्चित रूप से अज्ञान की ग्रंथियाँ सुलझेगी।

सिद्धारूढ़ स्वामीजी के पावन चरणों में आकर भक्तजन अपनी गृहस्थी के कार्य सफल कर लेते हैं। रूपकृष्ण नाम का एक भक्त था, सिद्धनाथजी के चरणों मे उसकी अपार श्रद्धा थी। वह अपनी सुंदर पत्नी भाग्यवती के साथ प्रतिदिन गुरुजी की सेवा करते थे। परंतु उनकी संतान न होने के कारण, भाग्यवती ने दीन होकर सतगुरुजी से पुत्र प्राप्ति की प्रार्थना की। पुत्र का चेहरा देखे बिना इस गृहस्थी में कोई सुख नहीं, ये भाग्यवती की बात सुनकर सिद्धनाथजी हँसकर

बोले, "जो मनुष्य घरगृहस्थी में ही सुख है ऐसा समझता है, उसे धन, पुत्र तथा पत्नी ये सुखदायी लगते हैं; आपके पास सिवाय पुत्र के सब कुछ है, लेकिन पुत्र न होने का आप को दुख हैं। पुत्रसुख का अनुभव किये बिना लोग उसे नहीं समझ सकते, इसलिए फिलहाल आप दोनों को पुत्र के बगैर कुछ भी अच्छा नहीं लगता। इसीलिए आप को संतान देने की आवश्यकता है, वर्ना संतान प्राप्ति की मनोकामना अधूरी रह जाने से आप को फिर से जन्म लेना पड़ेगा। हालाँकि, जगदीश्वर ने आप को संतान नहीं दी, फिर भी सतगुरुजी, जो ईश्वर का भी ईश्वर है, वही आप की मनोकामना अवश्य पूर्ण करेगा। सिद्धनाथजी ने प्रसाद के तौर पर भाग्यवती के हाथ पर विभूति (भस्म) रख दी। वह प्रसाद लेकर भाग्यवती घर लौटी। सतगुरुवचन हमेशा सच होता है, परंतु इस का अर्थ ये नहीं की हम उनके चरणों को भुला दे। इसीलिए वह हमेशा सतगुरुजी के चरणकमलों का चिंतन करती रहती थी। उनके चरणों का विस्मरण होते ही आपत्ति का सामना करना पड़ता है, लेकिन उनके चरणों के चिंतन से हमेशा शांति का अनुभव होता है। घरगृहस्थी में ही सुखचैन से रहने वालों को सतगुरु चिंतन ही पार लगाता है, इसलिए, विषयोपभोग की कामना करने वालों को अहर्निश नाम जप करने का उपदेश किया जाता है। ऐसे मनुष्य विषयोपभोग की लालसा मन में रखते हुए अहर्निश नामजप करते हैं, जिससे उनका मन दिन-ब-दिन शुद्ध होकर उन्हें विषयोपभोग का विस्मरण होने लगता है। अस्तु। भाग्यवती गर्भवती हो गयी और उसने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। आगे चलकर एक एक करके उसे नौ बच्चे हुए, परंतु अनेक बच्चों के कारण वह बहुत ही त्रस्त हो गयी। सिद्धनाथजी के पास जाकर बोली, "मैं इस घरगृहस्थी के झंझट से बहुत त्रस्त हो गयी हूँ| बच्चों के कारण मेरे मन को बहुत ही परेशानी हो रही है| अब मुझे और संतान नहीं चाहिए।" उसकी ये करुण बातें सुनकर उन्होंने उसे 'गुरुकृपा से जैसा चाहती हो वैसा ही हो जाए' ऐसा आशिर्वाद दिया। उसके बाद उसे संतान नहीं हुई। कुछ समय बाद कामधंदे के सिलसिले में रूपकृष्ण को किसी जरूरी काम से मद्रास जाना पड़ा। पति पत्नी दोनों विदा लेने के लिए मठ पहुँचे, सतगुरुजी चरणों में सिर रखकर प्रणाम करते समय दोनों की आँखों से झरझर अश्रु बह रहे थे। उन्होंने गुरुमहाराजजी को बिनती की, "हम दोनों को कामधंदे

के सिलसिल में मद्रास जाना पड़ रहा है, परंतु सतगुरुजी को छोड़कर कैसे जाएँ, यही समझ में नहीं आ रहा है।" उनका दुख और तड़प देखकर सिद्धनाथजी ने कहा, "आप दोनों बिना भूले प्रतिदिन सतगुरुजी का भजन तथा नामजप करते रहिए। मैं हमेशा आप के साथ ही हूँ।" उनके बोल सुनकर वह जोड़ा आनंदित हुआ और गुरुजी की आज्ञा लेकर बच्चों के साथ मद्रास गया। मद्रास में कुछ दिन चैन से बीते ही थे की, इतने में वहाँ छूत से फैलनेवाली प्लेग की बीमारी फैल गयी, जिससे अनेक लोगों की मृत्यु हो गयी। उस समय, जब एक बार रूपकृष्ण किसी काम से दूसरे गाँव गया था, तब भाग्यवती का पाँच वर्ष का पुत्र ज्वर से बीमार हो गया। रात के दो प्रहर बीत गये, भाग्यवती अपने पुत्र के सिरहाने बैठी थी। ज्वर और भी तेज हो गया हुआ देखकर उसे लगा की शायद पुत्र की मृत्यु का समय आ गया होगा। मासूम बच्चों के सिवाय, घर में अन्य पुरुष अथवा कोई मददगार भी नहीं है, यह ध्यान में आते ही भाग्यवती मन ही मन भयभीत हुयी। देखते देखते उसके पुत्र के प्राण शरीर छोड़कर जाने लगे। उस समय भाग्यवती ने गिड़गिड़ाते हुए सतगुरुजी से प्रार्थना की, "हे सिद्धनाथजी जल्दी आईए। एक पलभर की भी देरी किए बगैर दौड़कर आईए और मेरे पुत्र के प्राण बचाईए। आप का नाम जपने के सिवाय मैं और कोई दूसरा औषधोपचार करने वाली नहीं हूँ। मेरे पुत्र को बचाने का सारा भार मैं ने आप पर सौंपा है। मेरे पुत्र के प्राण अब जा रहे हैं, आपके सिवाय और कोई भी उसके प्राणों की रक्षा नहीं कर सकता। इसलिए, सत्वर आकर मेरे पुत्र के प्राण बचाईए।" अपने पुत्र को गोदी में लेकर जैसे ही उसने दरवाजे की ओर देखा, तब उसे परदा हटाकर साक्षात सिद्धनाथजी को अंदर आते हुए दिखाई पड़े। उन्होंने धोती पहनी थी तथा लाल वस्त्र सिर पर बाँधा था। चेहरे पर दिव्य तेज की प्रभा छाए हुए सिद्धनाथजी उसकी ओर कृपादृष्टि से देख रहे थे। नंगे पैर अंदर आते सतगुरुजी को देखकर वह हैरान रह गयी। सिद्धनाथजी ने समीप आकर कहा, "बेटी, तुमने मुझे क्यों बुलाया?" उसने पुत्र की ओर निर्देश करते हुए अपने आसन्नमरण पुत्र को उठाया। सिद्धनाथजी ने उसके पुत्र को उठाया और उसके शरीर पर अपना अमृतसमान हाथ फेरा, उसी क्षण वह बालक सिर उठाकर रोने लगा। भाग्यवती आनंद से फूले न समायी और उसने सिद्धनाथजी के चरणों मे आदरपूर्वक माथा

रखा और उठकर देखा तो उसे सतगुरुजी दिखाई न पड़े। सतगुरुप्रेम से वह गद् गद् हो उठी, उसने इधर उधर देखा, लेकिन सतगुरुनाथ उसे कहीं भी दिखाई न पड़ने पर वह तड़प उठी। वह मन ही मन बोली की मैं ने सतगुरुनाथजी की पूजा नहीं की तथा उनको प्रणाम तक नहीं किया, इतने में वह चले गए, सचमुच मेरा भाग्य ही कठोर है| इस प्रकार सोचते हुए भाग्यवती उदास होकर बैठी थी की इतने में रूपकृष्ण घर लौटा। उसने रूपकृष्ण को पूरी घटना विस्तार से बताई। पुत्र को सुरक्षित देखकर उन दोनों का मन उमड़ आया। उसपर रूपकृष्ण ने कहा की अब शीघ्र ही गुरुदर्शन करने चाहिए। दूसरे दिन घरवालों को साथ लेकर रूपकृष्ण हुबली के लिए निकल पड़ा और सिद्धाश्रम पहुँचकर सिद्धनाथजी से मिला। उस जोडे ने सिद्धजी के चरणों पर माथा रखकर उन्हें मद्रास में घटी हुई घटना विषद की। उन्होंने कहा, "हे प्रभु सिद्धनाथजी, आप की कीर्ति हम कैसे बयान कर सकते हैं? अगर हम सबकुछ आपके चरणों पर न्यौछावर कर भी देंगे, तब भी हम आप के ऋणों से मुक्त नहीं हो सकते।" श्रीसिद्धारूढ़ स्वामीजी ने कहा, "सतगुरुजी पर सारा भार सौंपने पर, वही भक्तों की रक्षा करते हैं, ऐसे भगवत गीता में भी लिखा गया है।" सतगुरुजी के बोल सुनकर सभी भक्तों को अपार हर्ष हुआ और वे बोले की सिद्धमाता जैसे एक चिंतामणि (जो माँगो वह देनेवाला रत्न) है।

श्रोतागण, अब इस कथा का लक्ष्यार्थ सुनिए। विषयओपभोग की लालसा करने वालों को अज्ञानवश ये समझ में नहीं आता की विषयोपभोग से घोर दुख प्राप्त होता है। ऐसे मनुष्य सतगुरुजी से पुत्र, धन आदि वस्तुओं की माँग करते हैं। एक बार विषयोपभोग की वस्तु प्राप्त होने के पश्चात दु:खदायी अनुभवों का सामना करना पड़ता है| तब वे सतगुरुजी के शरणागत होकर उन्हें सांसारिक कष्टों से उनकी रक्षा करने की प्रार्थना करते हैं। सतगुरुजी उन्हें इन विषयोपभोगों से प्राप्त दुखों से मुक्त करने के पश्चात वे सतगुरुनाथजी की अनन्यभाव से भक्ति करते हैं, जिससे उनका मन शुद्ध होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है की, सतगुरुजी की अनन्यभाव से भक्ति करने से बोध रूपी पुत्र की प्राप्ति होती है, वहीं जीवात्मा को बचाता है। अनेक शास्त्रों का पठण करने के पश्चात भी संदेह के रूप में प्लेग की ग्रंथि आकर बोध रूपी पुत्र पर आक्रमण

करती है, जिससे उसका प्राणांत होने लगता है। अगर उसी समय सतगुरुजी को दुहाई देने से, वे हृदय में प्रकट होकर ज्ञानबोध देकर संदेह रोग का निवारण करते हैं। जिससे बोध रूपी पुत्र की रक्षा होती है और चारो ओर हर्ष फैलता है। इस प्रकार सिद्धारूढ़ स्वामीजी मुमुक्षुओं का रक्षण करते हैं। सिद्धनाथजी परिपूर्ण ब्रह्मानंद ही हैं। सर्वगत हुए उन्होंने मेरे हृदय को पूरी तरह से व्याप्त करने के कारण वहीं इस ग्रंथ को लिखवा लेंगे। श्रोतागण, अगले अध्याय में बयान की हुई कथा सुनने के लिए आप सतर्क हो जाईए। सतगुरुनाथजी स्वयं ही श्रोता तथा वक्ता होने के कारण वे अपनी जीवनी स्वयं बयान कर रहे हैं। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह पंद्रहवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥